5

कक्षा में क्यों सोते हैं बच्चे?

जगदीश प्रसाद करवासरा*

भारतीय पुरातन शिक्षा प्रणाली में गुरूकुल शिक्षा पद्धति और उसमें निरंतर हो रही गिरावट का प्रभाव, वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखकर अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि हमारा शैक्षिक परिदृश्य कितना बदल चुका है। मुझे आश्चर्य होता है कि 70 के दशक में मैंने जब शिक्षा की पाठशाला में प्रवेश लिया था तब शायद मेरी उम्र 6 वर्ष से कम की नहीं होगी। उस समय शाला में प्रवेश की उम्र 6 वर्ष तक ही निर्धारित रही होगी या लगभग अभिभावक और अध्यापकों की सोच भी यही हुआ करती थी कि बच्चा 6 साल का हो तभी उसे पाठशाला में अध्ययन के लिए प्रवेश दिया जाए। कुछ हद तक इस अवस्था में बच्चे का शारीरिक विकास हो जाता है और कक्षा प्रथम के स्तर पर पढ़ाई जाने वाली बातों का अधिगम भी कर लेता है। यह सब अब पुरानी बातें हो चुकी हैं। अब न तो अभिभावक और न ही अध्यापक ऐसा सोचते हैं। तो फिर हम किस दिशा में जा रहे हैं? क्यों हमारा बच्चा मुरझाया हुआ-सा रहने लगा है? क्यों बच्चे की सोच विस्तृत नहीं हो पाती है? क्यों बच्चों को छोटी उम्र में ही चश्मा लगाना पड़ता है? क्यों बच्चे शारीरिक खेलों से दूर होते जा रहे हैं। क्यों हम बच्चों की पीठ पर बोझ लादते जा रहे हैं? क्या हम बच्चों को सर्वांगीण विकास की ओर बढ़ा रहे हैं? इस प्रकार के सैकड़ों प्रश्न मेरे दिमाग में अचानक घूम गए। इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए मैं चल पड़ा प्ले ग्रुप स्कूलों की ओर।

तो आइए, मैं ले चलता हूँ आपको एक प्ले ग्रुप स्कूल में और उन नन्हे बच्चों की कक्षा में जहाँ पर भारत के भविष्य को सँवारने का दावा किया जाता है। जैसे ही मैं कक्षा 3 में पढ़ रहे बच्चों की कक्षा में प्रवेश करता हूँ तो टेबल पर बैठी अध्यापिका बच्चों की कॉपी जाँचने में इतनी खोई हैं कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कोई अजनबी कक्षा में आ गया और वह कुछ देख रहा है। खैर...कक्षा दृश्य... एक छोटी लड़की बोर्ड के पास की तरफ़ मुँह किए खड़ी होकर बोर्ड पर लिखी टेबल (पहाड़े) बोले जा रही है — टू वनज्या टू...शेष कुछ बच्चे जो उस लड़की की तरफ़ ध्यान दिए हुए हैं उसका अनुकरण करते हुए दोहराते हैं टू वनज्या टू...। कुछ बच्चों को इस टेबल (पहाड़े) से कोई लेना-देना नहीं है।

**प्राचार्य,* सेठ जी.बी. पोद्दार, टी.टी. कॉलेज, नवलगढ़, झुंझुनू, राजस्थान

गुमसुम से अपनी कुर्सी पर बैठे हैं और उबासी ले रहे हैं। दो-चार बच्चे मेरी किताब-मेरी किताब करते हुए आपस मे खेल रहे हैं। दो बच्चे टेबल पर माथा रख कर सो रहे हैं।

कक्षा 2 का दृश्य...यहाँ पर मैं प्रवेश करता हूँ तो कुर्सी पर बैठी अध्यापिका की नज़र मुझ पर पड़ जाती है तो वे बच्चों से कहती हैं—बोलो बच्चों 'गुड ऑफ्टरनून सर'...और बच्चे मैडम का अनुसरण करते हुए बोलते हैं गुड ऑफ्टरनून सर। मैंने बच्चों का अभिवादन एक मुस्कान के साथ स्वीकार कर उन्हें बैठने का इशारा किया तो समवेत स्वर में आवाज़ आई "थैंक्यू सर..."। कुछ बच्चे, लगभग तीन की आँखें ही नहीं खुलीं, उन्हें नहीं पता कि कक्षा में कोई अजनबी भी आ गया है क्या? कुछ बच्चे आपस में छीना-झपटी कर रहे हैं।

कक्षा प्ले ग्रुप का दृश्य

यहाँ बच्चे गोल मेज की तरफ़ मुँह करके गोल घेरे में बैठे हैं। 5–6 बच्चे टेबल पर माथा टिका कर सो रहे हैं और उनकी अध्यापिका बच्चों द्वारा किए गए होमवर्क को देख रही हैं। कुछ बच्चे खेल रहे हैं। एक बच्चा अपनी पानी की बोतल से फर्श पर पानी गिराकर हाथ से पौंछा लगा रहा है। एक बच्चा दूसरे बच्चे की कमीज़ पकड़ कर गिराने का असफ़ल प्रयास कर रहा है। 4 बच्चे अपनी टेबल पर माथा रख कर गहरी नींद में सो रहे हैं।

यह सभी दृश्य देख कर मेरे मन में एक विचार आया कि बच्चे कक्षा में क्यों सोते हैं? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए मैंने झुंझुनू जिले की नवलगढ़ तहसील के चुनिंदा 20 प्ले ग्रुप (इंग्लिश माध्यम) स्कूलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण का समय स्कूल के पाँचवे-छठे कालांश का रखा गया। लगभग हर स्कूल की कक्षा का दृश्य वैसा ही मिला जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है। फिर इन बच्चों की अध्यापिकाओं से मैंने बच्चों के सोने का कारण जानना चाहा तो उत्तर एक जैसा ही मिला कि बच्चे सुबह 4 से 5 घंटे स्कूल में ठहरकर पुनः वाहनों से अपने घर पहुँचते हैं, इस प्रक्रिया में 7-8 घंटे लगते हैं, तो बच्चे थक जाते हैं तथा नींद आना स्वाभाविक ही है। घर पर भी उन्हें होमवर्क करना होता है। जिस बच्चे की उम्र खाने, खेलने और सोने की है, उस उम्र में उसे पढ़ने जैसा भारी काम दे दिया जाए और ऊपर से मैडम की मार का डर अलग, तो फिर वह कैसे आगे बढ़ेगा? यही नहीं अभिभावकों की रोज़ की यह बात भी सुननी होती है कि फलाँ आंटी का बच्चा तो इतना होशियार है? फलाँ बच्चा तो तुम्हारे से छोटा है फिर भी वह जल्दी सीख जाता है।

इन सबके पीछे क्या कारण हो सकते हैं? यह जानने के लिए इन विद्यालयों के अध्यापकों, अभिभावकों और प्रबंधकों से भी यह जानने का प्रयास किया गया कि अकसर बच्चे कक्षा में क्यों सोते हैं? इसके लिए एक साधारण प्रश्नावली अध्यापकों, अभिभावकों और प्रबंधकों के लिए अलग-अलग प्रकार के साधारण प्रश्न तैयार कर बनाई गई। इस प्रश्नावली को इस प्रकार से लागू किया गया कि उन्हें पता ही नहीं चलने दिया गया कि उनसे कोई प्रश्न पूछा जा रहा है। बातों ही बातों में बच्चों की कक्षा से संबंधित प्रश्न पूछ कर जानने का प्रयास किया गया कि प्ले ग्रुप के बच्चों को कक्षा में नींद क्यों आ जाती है? अधिकतर अभिभावकों और

Chapters- PS-April 2016.indd 30 27-07-2017 PM 12:51:58

यहाँ तक कि अध्यापकों का भी यही मानना था कि बच्चा आखिर कब तक दिमाग को किसी एक बिंदु यथा लिखना और याद करना आदि की ओर स्थिर कर पाएगा। कोई एक बिंदु तो ऐसा आएगा ही जहाँ पर वह थक-हारकर निद्रा की ओर अग्रसर होगा।

यहाँ पर प्रबंधकों का मिला-जुला-सा जवाब था उनका कहना था कि बहुत कम बच्चे कक्षा में सोते हैं और जो बच्चे सोते हैं उनके लिए उनके अभिभावक ही ज़िम्मेदार होते हैं क्योंकि अधिकतर अभिभावक देर रात तक टी.वी. के आगे बैठे रहते हैं और बच्चे भी उनके साथ बैठे रहते हैं। सुबह अभिभावकों को अपने काम पर जाने की जल्दी होती है और वे बच्चों को जल्दी उठाकर स्कूल के लिए तैयार कर देते हैं जिस कारण उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती है। जो भी हो यहाँ स्थिति एक-दूसरे पर डालने वाली-सी ही लग रही है, जबकि बच्चों की तरफ़ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह एक सामान्य-सी बात लग रही है परंतु है गंभीर।

क्या आज हम बच्चे को उसकी आवश्यकतानुसार शिक्षा दे रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर जानने हेतु हिमाचल प्रदेश की रहने वाली एक शिक्षिका से जानना चाहा, तो उनका उत्तर था कि हमने बच्चे को बच्चा नहीं रहने दिया। उसे केवल रटंत तोता बना दिया है जो कि मैडम कहे कि एक रेखा को 5 सेंटीमीटर तक खींचना है तो वह उतना ही काम करेगा। उसे उसके आगे सोचने की स्वतंत्रता ही हमने नहीं दी है। जिस उम्र में बच्चे खेलते हैं उस उम्र में हमने उसे किताब व कॉपी थमा दी है तो आखिर वह इस बोझ को कैसे सहन कर पाएगा और उसे क्यों न थकान होगी। क्यों न उसे कक्षा में नींद आएगी।

इन सब बातों और कुछ अन्य लेखों के द्वारा मेरे मन में विचार आया कि आज जिस प्रकार का व्यवहार बच्चे के साथ उसके अभिभावकों, अध्यापकों और समाज द्वारा किया जा रहा है वह उचित नहीं है। तो फिर हमें क्या करना होगा कि बच्चा कक्षा में सोने की अपेक्षा पढ़े और अपनी क्षमता के अनुरूप अधिगम कर सके। इस हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं—

सुझाव

1. सरकार को वर्तमान में बनाई जा रही शिक्षा नीति में परिवर्तन करते हुए प्राथमिक शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
2. बच्चों की इच्छा के अनुसार उन्हें खेलने और पढ़ने की स्वतंत्रता देनी होगी।
3. अभिभावकों को कभी अपने बच्चों की तुलना पड़ोसी या रिश्तेदारों के बच्चों से नही करनी चाहिए। अपना बच्चा जो कुछ कर रहा है उसे ही ध्यान में रख कर उसमें सुधार की आवश्यकता हो तो सावधानीपूर्वक बच्चे को विश्वास दिलाते हुए करें।
4. बच्चा पैदा होते ही अभिभावकों को उसे पढ़ाने की चिंता सताने लगती है। कम से कम उसे 5 साल का अवश्य होने दें और उसके साथ वह व्यवहार स्वयं करें जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप तो हो ही और आप स्वयं जो पसंद भी करते हों।
5. बच्चे को विद्यालय में प्रवेश दिलवाएँ तो उसके साथ जाकर विद्यालय की सुविधाओं का भी जायज़ा लें।

Chapters- PS-April 2016.indd 31 27-07-2017 PM 12:51:58

6. विद्यालय के अध्यापक बच्चे के साथ अभिभावक जैसा व्यवहार करें और उसे घर जैसा वातावरण प्रदान करें।
7. खेल के माध्यम से बच्चों को अधिक देर तक पढ़ाने का प्रयास करें और खेल बच्चों की रुचि का हो तो अधिक बेहतर हो सकेगा।
8. विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक प्रत्येक बच्चे को नाम से पुकारें और उसके द्वारा की गई गलती को हँसते हुए उसमें सुधार करने का प्रयास करें।
9. बच्चा आगे होकर कुछ कहने एवं करने का प्रयास करे, तो उसे उसी समय सुनना और करने देना चाहिए। टोका-टाकी बिल्कुल भी न करें।
10. यदि कोई अलग तरह का व्यवहार बच्चे में दिखाई दे तो तुरंत उसके अभिभावकों को सूचित करें और उसके व्यवहार में सुधार हेतु स्वयं भी प्रयास करें।
11. अभिभावकों को अपने बच्चे के खान-पान, अध्यापन के साथ-साथ उनकी नींद का भी पूरा ख्याल रखना होगा।
12. विद्यालय प्रबंधकों को समय-समय पर अभि-भावकों से मिलकर उनके बच्चे के कक्षागत व्यवहार पर चर्चा कर कक्षा में सोने वाले बच्चों के लिए आवश्यक कारणों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना होगा।

मैं समझता हूँ कि इस प्रकार से बच्चों के साथ उनके अध्यापक और अभिभावक व्यवहार करेंगे तो वह कक्षा में नहीं सोयेगा और कुछ नया सृजन करने में लगा हुआ मिलेगा।

सही तो है—

बालक हैं नादान, उनकी गलतियों को ना देखो तुम।
प्रेम करो और समझाओ, उसे ना क्रोध से डाँटो तुम।।

शायद यही हम नहीं कर पा रहे हैं और हमारा भविष्य आगे बढ़ने की चिंता में सोया जा रहा है। भविष्य को सोने न देना, उसे जगाए रखना यह हम सभी का कर्त्तव्य है और इस कर्त्तव्य का पालन करके ही हम भारत के भविष्य को सँवार सकेंगे।

Chapters- PS-April 2016.indd 32 27-07-2017 PM 12:51:59